5. विकासपरक प्रणाली (Development Media Theory)

यह विकासशील देशों के लिए है, जहाँ मीडिया का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र निर्माण और विकास की सूचना देना है।

* प्रासंगिकता: ग्लोबल साउथ (एशिया, अफ्रीका) में आज भी प्रासंगिक है।

* आलोचनात्मक विश्लेषण: अक्सर सरकारें विकास के नाम पर अपनी आलोचना को दबा देती हैं। 'विकास' की आड़ में मीडिया की निगरानी करने की प्रवृत्ति बढ़ी है।

6. लोकतांत्रिक सहभागी प्रणाली (Democratic-Participant Theory)

यह मीडिया में जनता की सीधी भागीदारी और छोटे/स्थानीय मीडिया समूहों पर जोर देती है।

* प्रासंगिकता: सोशल मीडिया, पॉडकास्ट और सामुदायिक रेडियो के दौर में यह सबसे अधिक प्रभावी हुई है।

* आलोचनात्मक विश्लेषण: यद्यपि इसने सूचना का लोकतंत्रीकरण किया है, लेकिन इसके कारण 'इको चैम्बर्स' (एक जैसे विचारों में कैद होना) और 'हेट स्पीच' की समस्या भी पैदा हुई है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मुख्य निष्कर्ष:

चुनौती	प्रभाव
डिजिटल विभाजन	सूचना तक सबकी पहुँच एक समान नहीं है।
एल्गोरिदम नियंत्रण	अब नीतियाँ इंसानों से ज्यादा AI और एल्गोरिदम तय कर रहे हैं।
निगरानी पूँजीवाद	डेटा ही नया तेल है, जिससे प्रेस की स्वतंत्रता प्रभावित हो रही है।

निष्कर्ष: आज के समय में कोई भी देश किसी एक शुद्ध प्रणाली पर नहीं चलता। वर्तमान में 'सामाजिक उत्तरदायित्व' और 'लोकतांत्रिक सहभागी' प्रणालियों का मिश्रण ही सबसे प्रभावी समाधान नजर आता है, ताकि सूचना की सत्यता और जनता की आवाज दोनों बनी रहें।